मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

डा० के० एल० जौड़ा
एम.एस.सी., पी.एच.डी.

वर्ष 8	बुधवार 10 मार्च 1982	संख्या 11

सत्संग परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 14-6-81

मित्रो ! मेरे पिछले कर्म समझ लो या भगवान् की इच्छा समझ लो, बचपन से उस मालिक को मिलने की तलाश थी। इस सिलसिले में हिन्दुओं ने कुछ कहा, राधास्वमीयों ने कुछ कहा, किसी ने कुछ कहा। इन सब में भिन्नता थी। भिन्न-2 प्रकार के विचार थे। कोई कहता है राम-राम जपो कोई कहता है सत्त नाम जपो, कोई कहता है, राधास्वामी नाम जपो, कोई कहता है ओम् तत् सत् कहो। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूंगा। जो कुछ मेरा अनुभव होगा

वह मैं बता जाऊंगा। अत: मैं अपना कर्म भोगता हूं, आप पर कोई एहसान नहीं। आज आपको कबीर साहिब का शब्द सुनाता हूं :—

जा घट प्रीत न प्रेम रस, पुन रसना नहिं नाम,
ते नर पशु संसार में उपजे मरे बे काम।
सतनाम जाना नाहिं लागी मोटी खोर,
काया हांडी काठ की, न वह चढ़ै बहोर।

कबीर साहिब कहते हैं कि सत्त नाम के बिनां काम नहीं चलता, राधास्वामी मत वाले कहते हैं कि राधास्वामी नाम के विना काम नहीं चलता, कई कहते हैं कि पँच नाम के बिना काम नहीं चलता, कई कहते हैं कि राम नाम के विना काम नहीं चलता। मेरा जीवन इस खोज में गुजरा कि राधास्वामी नाम, सत्तनाम या राम नाम क्या है। अब मैं समझता हूं। कि बात क्या है? वह बात मैं आज आप लोगों को समझाना चाहता हूं :—

सत्तनाम पारस सरिस जन मन मेला लोह,
कर परसत कंचन भया छुटा काम मद मोह।

वह कहते है कि सत्तनाम पारस है तथा लोगों का गन्दा मन लोहे के समान है। वह जब उससे मिल जाता है तो वह साफ होकर काम, मद, मोह इत्यादि का सारा गन्द छूट जाता है। मैं सोचता हूं कि क्या मुख से या मन के साथ सत्तनाम-2 जपने से तुम्हारे मन के अन्तर जो गन्दगी और गिरावट है, वह धुल सकती है? मगर मैं तो देखता हूं कि संसार में यह जो बड़े-2 महन्त और गुरु बने हुये हैं जो कि सत्तनाम का उपदेश देते हैं इनका तो मोह वहीं गया, इनके मन का मैल ही नहीं गया। इनमें भी गुरु किसी के अन्तर नहीं जाता तथा न ही मरते समय ले जाता है। मगर यह कहते क्या हैं? यह कहते हैं कि हम जाते हैं तथा इस प्रकार जनता से पैसा लेते हैं, मत्थे टिकवाते हैं। अत: जो सत्तनाम उन्होंने जपा उस सत्तनाम ने उनको क्या लाभ दिया। क्या उनका मन पवित्र (साफ़) हो गया? मैंने नाम जपा, बहुत माला जपी। कई व्यक्ति सत्तनाम, सत्तनाम, सत्तनाम जपा करते हैं। यह एक प्रश्न है कि क्या उनके मन निर्मल हो गये?

फिर मैं स्वयं से पूछता हूं कि तेरा मन कैसे साफ़ हुआ ? शतप्रतिशत तो नहीं हुआ मगर 99 प्रतिशत अवश्य हुआ। वोह किसने किया ? वह केवल सत्तनाम के जाप ने नहीं किया। बिल्कुल नहीं। बल्कि वह वह नाम था जो गुरु ने मुझे आज्ञा दी। किस गुरु ने मुझे यह नाम दिया :—

नाम रहे सतगुरु अधीना।

दाता ने मुझको यह नाम दिया था। इस नाम के साथ मुझे उन्होंनो विशेष हिदायतें (आज्ञाएं) की थीं कि ऐसा करना, ऐसा करना, ऐसे जीना, ऐसे जीना। तो मैंने जब नाम भी जपा तथा उनके द्वारा बताई गई बातों पर भी चला तब मेरा मन निर्मल हुआ। मगर अब तक 1 प्रतिशत अभी शेष है। जिस दिन यह सत्संग छोउ जाऊंगा उस दिन शत-प्रतिशत निर्मल हो जायेगा। क्योंकि जो सत्संग मैं कराता हूं यह मेरी आज्ञा है। यह मेरी इच्छा थी कि मेरा जो कुछ अनुभव होगा वह बता जाऊंगा।

तो मेरा अनुभव क्या कहता है ? कोई लाख

मुख से सत्तनाम गाता रहे वह सत्तनाम नहीं है। लोग कहते हैं कि जो अन्तर में धुन प्रकट होती है वह नाम है। बहुत अच्छा। जिन व्यक्तियों ने अपने अन्तर में शब्द सुने क्या उन्होंने चारसौबीस नहीं की? इन महात्माओं ने अपने अन्तर नाम सुना। फिर उन्होंने पर्दा क्यों रखा? क्यूं कहा कि हम जाते हैं। नाम ले जाओ हम अन्त समय में तुमको ले जायेंगे। अत: प्रमाणित हुआ कि जो अनहद नाम सुना यह भी पूरा नाम नहीं हैं। मैंने बसरे, बगदाद में वीणें सुनीं। तीन मास मेरे मस्तिष्क में वीनें बजती रहीं। वीन सुनने के पश्चात् जब मैं घर में आया तो क्या मैं कामी नहीं हुआ, क्या मैं मन के चक्कर में नहीं आया? यदि सन्तान के लिए पत्नी के पास जाता तब तो कोई बात नहीं थी। मैं तो विषयी हो गया। तो मेरी वीनें सुननी कहाँ गयीं? यह मेरा निज अनुभव है। अत: जो नाम अन्तर में धुनात्मक है मैं इस को नाम नहीं समझता। चाहे, इसका होना आवश्कय है। इसके साथ-२ किसी योग्य पुरुष का सत्संग भी है। उनकी आज्ञा को जो नहीं मानता वह मंज़िल तक नहीं पहुंचता। शब्द इसलिए सुना

जाता है कि व्यक्ति को पता चल जाय कि मैं कौन हूं। एक व्यक्ति को ज्ञान भी हो गया कि मैं कौन हूं लेकिन यदि वह अपने जीवन को नियमानुकूल नहीं गुजारता तो उसके ज्ञानी होने से क्या लाभ ? अत: यह जो मार्ग है, यह करनी, अमल व रहनी का मार्ग है। क्रियात्मक जीवन का मार्ग है।

मैंने सत्तनाम को क्या समझा ? अनुभव। "सद्गुरु की बात को समझ करके अपने अन्तर शब्द को सुनने के पश्चात् जो Realization होती है उसके अनुसार रहनी का नाम, नाम की प्राप्ति है यह सत्तनाम है। सत्तनाम में अनुभव है। अपने आप में ठहरने का नाम सत्तनाम है। यही स्वामी जी ने कहा है :—

सुरत शब्द द्वौ अनुभव रूपा, तू तो पड़ा भ्रम के कूपा।

वह कहते हैं कि सुरत से शब्द को सुनना क्या है ? इससे अनुभव होना। यदि अनुभव नहीं हुआ और शब्द के पीछे फिरते हो तो भ्रम में हो। यदि कबीर आदि जीवित होते तो मैं इन सन्तों

को पूछता कि आपने यह क्या आडम्बर रचाया है ? ऐक राम-राम जपने को कहता है, दूसरा सत्तनाम जपने को कहता, तीसरा कहता है यह काम करो। क्या उस काम को करने से दुनिया सुधर गई ?

सत्तनाम निज मूल है, मन्त्र यन्त्र सब डार,
कहे कबीर सत्तनाम विन, बूड़ मुआ संसार।

वह कहते हैं कि मन्त्र, यन्त्र की कोई आवश्यकता नहीं। सत्तनाम के बिना कोई लाभ नहीं। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तुमको सत्तनाम मिल गया ? मुझे सत्तनाम केवल यह मिला कि जब से मुझे मन के रूप की समझ आई और मुझे यह विश्वास हो गया कि मेरे मन के अन्तर जितने ख्यालात, विचार और शकलें पैदा होती हैं यह Reality (सच्चाई) नहीं है। यह Suggestions & Impressions हैं। प्रकृति है, माया है। तब मैं मन को छोड़ जाता हूं। अब मेरे मन के अन्तर जितने विचार पैदा होते हैं, मैं उनकी परवाह नहीं करता और अपने आप को उस स्थान पर रखने व वहां ठहरने का प्रयत्न करता हूं, जहां ठहर कर

मैं प्रकाश को देखता और शब्द को सुनता हूं। जब कभी इस अवस्था में होता हूं तो मुझे क्या होता है? मैं कह नहीं सकता। जिह्वा पर कहने के लिए शब्द नही हैं। मेरे जीवन की वह एक हालत है, एक अवस्था है। State of my existance यहाँ न मुझे दुःख है न मुझे सुख है,न पुण्य है न पाप है,न गुरु है न शिष्य है, न नाम है न अनामी है। एक अवस्था आ जाती है। केवल यह अवस्था मुझे मिली इसके अतिरिक्त मुझे कुछ नहीं मिला। यही बात राधा-स्वामी दयाल ने जेठ महीने में कही है कि जहां हमने पहुंचना है वहां क्या है? वहां न सत्तनाम, न नाम, न अनामी।

इस अवस्था में चले जाने का नाम सत्तनाम की प्राप्ति है :—

> सत्तनाम निज मूल है, मन्त्र यन्त्र सब ड़ार,
> कहैं कबीर सत्तनाम विन, बूड़ मुआ संसार।

फिर निज मूल क्या हुआ? निज मूल मेरा वह Self है जो प्रकाश को देखता और शब्द को सुनता है। जब मैं उस अवस्था में चला जाता हूं वह निज

मूल है। मैंने सत्तनाम को यह समझा। अब सत्त-नाम नाम तुम न रखो उसके अतिरिक्त राम या निजनाम कह लो। इसका कोई भी नाम रखो। मैंने सत्तनाम को क्या समझा? वह मूल क्या है? मूल मेरी अपनी ही ज़ात है जो वास्तव में मैं हूं, जो शब्द को सुनती और प्रकाश को देखती है, जो मन के चक्करों की साक्षी है वह जो वस्तु है वह मूल है। अत: सत्तनाम कौन हुआ? मेरी निज ज़ात तुम्हारी अपनी ही ज़ात सत्तनाम है और कोई बाहर का सत्तनाम नहीं। यह सच्चाई है जो मैंने अनुभव की।

सत्तनाम निज मूल है, मन्त्र यन्त्र सब ड़ार,
कहै कबीर सत्तनाम बिन, बूड़ मुआ संसार।

वह ठीक कहते हैं कि संसार बूढ़ मरा। कैसे मर गया? क्योंकि हमने इस अपनी ज़ात को नहीं जाना। कहीं दूसरे ही ख्याल में राम शब्द में, राधास्वामी शब्द में, किसी और की शक्ल में उसके साथ बंधे रहें, उसमें डूबे रहे। मैं जो कह रहा हूं इसे कौन समझेगा। यह सन्तमत है तथा यह

Reality है। कैसे डूब मरा ? मैंने आपको बता दिया कि सत्तनाम क्या है। सतनाम वह है जहाँ हमारा Self सब से भिन्न होकर अपने आप में ठहर जाता है। तुम्हारी अपनी ही ज़ात सतनाम है। जो इस सतनाम को नहीं जानता वह क्या करता है ? वह संसार में डूब मरता है। संसार उसका क्या है ? सम और सार अर्थात् जो वस्तु सार के समक्ष आती है वह संसार है। जो वस्तु हमारे Self के समक्ष आती है, जो कुछ हमारे सामने प्रकट होता है अर्थात् हमारे जीवन के समक्ष जो ख्यालात उठते हैं हम उन में बह जाते हैं। कैसे डूब मरा संसार ? हमारा निज Self जो है यह अपने आप को छोड़ कर दूसरी किसी और वस्तु के पीछे लगा हुआ है इसलिए संसार डूब मरा।

कोट नाम संसार में, तिन ते मुक्ति न होय,
सत्तनाम है सार जप, बूझै विरला कोय।

अब वह कहते हैं कि जितने भी नाम तुम जपते हो, सत्तनाम के बिना उनसे तुम्हारी मुक्ति नहीं होगी। व्यक्ति मुक्त कब होगा ? जब तक उसका

Self या जो कुछ उससे निकलता है उससे बंधा हुआ है वह बन्धन में है। लेकिन यदि वह उसको छोड़ जाएगा, वह मुक्त है। केवल जिह्वा या मुख से सतनाम-सतनाम कहने से मानव को मुक्ति नहीं मिलती। तुम उसका नाम सतनाम न रखो बल्कि कोई दूसरा नाम रख लो। भाव तो केवल बात को समझने से है। जो शब्दों के जाल में फंसा अर्थात् वाणी जाल महा जांल हैं। वाणी के जाल में फंसा हुआ व्यक्ति फंस जाता है। वास्तविकता को नाम कहते हैं। जो हमारा Self है और जो प्रकाश को देखता तथा शब्द को सुनता है। जिस समय वह अपने आप में है वह मुक्त है। यदि वह नीचे आकर रूप के साथ बंध गया प्रकाश के साथ बंध गया या संसारिक वस्तुओं के साथ बंध गया उसको फिर मुक्ति कैसी ?

राम राम सब जग कहै, नाम न चीन्हे कोय,
नाम गुरु की दात है, नाम कहावे सोय।

यह जो सतनाम है उसको गुरु देता है। पता नहीं कि मैंने पागल बन कर या मसीहा बन कर अपने

आप को सन्त सद्गुरु वक्त कहा है । मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि तूने जो यह कहा है । तो क्या तू अंहकारी हैं ? नहीं । सद्गुरु सच्चे ज्ञान का नाम है । नाम गुरु के आधीन है । कैसे ? गुरु उसको समझा देता है कि वास्तव में नाम क्या है तथा किस स्थान पर जाकर तुमको नाम की प्राप्ति होगी । यही सारा भाव है । बाहरी गुरु के बिना जो व्यक्ति नाम जपते हैं पुस्तकों के नाम से उनका उद्धार नहीं होता इस कड़ी में जो कहा गया है विलकुल सोलह आने ठीक कहा गया है । गुरु की दात कैसे है ? गुरु सत्संग में बिठा कर उसको वास्तविकता का साक्षात्कार करा देता है । फिर वह शब्दों के जाल से बच जाता है, बन्धन से बच जाता है तथा व्यक्ति क्रियात्मिक हो जाता है:—

सोहंग सोहंग जप मुआ मिथ्या जन्म गंवाय,
गुरु पारख मिले जौहरी रतन नाम बिलगाय ।

अब देखो,साधारण लोग सोंहग सोंहग जपते हैं । कबीर साहिब कहते हैं कि सोंहग-2 करते मर

गये, उनका क्या बन गया ? कुछ नहीं। बात बहुत ऊंची कह रहा हूं, बहुत सूक्ष्म है। मैं जानता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति इसको समझ नहीं सकता मगर यह मेरे वश की बात नहीं। बूढ़ा बूढ़ों जैसी बात करता है, युवक, युवकों की सी बात करता है तथा बच्चे बच्चों की सी बात करते हैं। मैं ऊंचा चला गया। मुझसे क, ख, ग, तो पढ़ाई नहीं जाती तथा न ही मैं पढ़ा सकता हूं :—

सुन्न शिखर चढ़ घर किया, सहज समाध लगाय।
नाम रतन धन तहां मिला, सद्गुरु भये सहाय।

आहा ! शून्य क्या है ? पाँच ज्ञान इन्द्रियां, पांच कर्म इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, चित्त तथा अहंकार यह चौदह लोक हैं। जब कोई इससे ऊंचा चला गया तो फिर वह कहां जाएगा ? वह अपने ही आप में ठहरेगा क्योंकि वहां न तो कर्म इन्द्रियाँ काम करती हैं, न ज्ञान इन्द्रियां काम करती हैं तथा न ही मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार होतें है। वह जो अवस्था होती है वह तुम्हारी निज ज़ात है। उस

अपने आप में ठहरने की जो अवस्था है उसका नाम सत्त नाम है :—

घट ही नाम की आस कर, दूजी आस निरास,
बसे जो नीर गंभीर में, क्यों वह मरै पियास।

परमार्थ की आशा करो। लेकिन हम लोग उसकी आशा नहीं करते। मैंने उसकी आशा की मैं दाता के पास सांसारिक वस्तुएं मांगने नहीं गया था। मगर मेरे पास जो आते हैं सांसारिक दु:खों से भरे आते हैं।

जैसा माया मन रमे, तैसा नाम रमाय,
तारा मंडल बेधि कर, तब अमरापुर जाय।

जैसे हम माया में ग्रस्त रहते है हमको संसारिक ख्यालात की इच्छा रहती है अगर ऐसी इच्छा वहाँ रखो, तो फिर क्या हो ? कब जाओगे ? जब शरीर मन तथा प्रकाश से आगे जाओगे। मार्ग में तारामण्डल क्या है ? प्रकाश ही है। प्रकाश से आगे जाना पड़ेगा। हमारा अन्तिम उद्देश्य क्या है ? हम अपने आप में ठहरें तथा निश्चिन्त, बेग़म, निर्भय, निर्वैर तथा अडोल रहें। इसको सहजसमाधि कहते हैं।

बाहरी गुरु की भक्ति इतनी ही है कि उस के पास बैठ कर सार वस्तु की समझ ले जायें। फिर अपने में ठहरने की भक्ति की जाती है। सत्त नाम की भक्ति है। जो कुछ है तुम्हारे मन के अन्दर है। सच्चे बन कर अपने अन्दर बैठ कर मागो। परमात्मा से धोखा मत करो।

सब को राधास्वामी।

धन्यवाद,

. एक सज्जन की चिट्ठी पहुंची है, जिसमें लिखने वाले का नाम तो दर्ज नहीं, परन्तु कुछ सुझाव 'मानव मन्दिर' के वारे में दिये गये हैं। उस सज्जन का मैं धन्यवादी हूं, जो-जो सुझाव ठीक हैं उन पर पूरी कोशिश की जायगी कि वे त्रुटियां आने वाले अंकों में दूर कर दी जायेगी, आशा है आगे भी आपकी ओर से हमें अच्छे सुझाव आते रहेंगे, ताकि मानव मन्दिर की त्रुटियां दूर की जा सकें।

आपका

के०एल०जौड़ा

[हजूर मानव दयाल जी के पिछले सत्संग का शेष भाग]

कि मैं कालेज में विद्या पढ़ाता हूं, वही जीवन का उद्देश्य है। आप इन्जीनीयर हैं, जो इन्जीनीयर हैं, उनको अवकाश कहाँ अर्थात् उनको अपने काम से अवकाश नहीं, अपने उस हिस्से से जो उनको ठेकेदारों से मिलता है फुर्सत नहीं, मालिक को याद करने को कहाँ फुर्सत है। उनका समय तो पार्टियों और समाचार पत्रों में कटता है और यदि कभी वे करना भी चाहें तो ठीक है वो थोड़े समय के लिए करेंगे, उनको समय ही नहीं है और मुझे तो मालिक ने पेशा ही ऐसा दिया है। क्या पढ़ाता हूं ? मैं भगवद्गीता, सन्तमत पढ़ाता हूं, जिससे पैसे कमाता हूं। मेरा पढ़ाने का व्यवसाय क्या है ? दर्शन पढ़ाना, धर्म पढ़ाना। मेरा मिशन भी यही है। पिता जी का दिया हुआ धार्मिक कृत्य भी वही करना है तथा पढ़ाते हुए भी वही काम। दिन रात मालिक का ही काम है। ऐसा अच्छा पेशा, ऐसा अच्छा व्यवसाय मालिक किसको देता है। मालिक का लाख-2 धन्यवाद कि व्यवसाय भी ऐसा दिया। इसीलिए मैं अभी पढ़ा रहा हूं। मैं आपके ही यहाँ उदयपुर में पढ़ाता रहा हूं। सन् 1975 तक उदय-

पुर विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र पढ़ाता था। मैंने कई पुस्तकें लिखी हैं और अब अमेरिका में पढ़ाता हूं तो इस लिए वहाँ यह होता है कि जब आप वहाँ पढ़ाते हैं तो वहाँ आपको बर्ष भर का Contract लिखना पड़ता है और जब वो Contract लिखते हैं तो आप छुट्टी नहीं ले सकते। यदि अवकाश लें तो उनको ढाई, तीन लाख रुपये देकर के आओ। अब ग़रीब ब्राह्मण के पास इतना पैसा कहां है कि उनको दे कर के आये। आया हूं तथा उनकी आज्ञानुसार काम कर रहा हूं। मैं थोड़े दिन के लिए आया हूं क्योंकि मुझे 4 तारीख तक वापिस पहुंचना है। यह छुट्टियां ही अपने आप उनकी क्रिसमस की छुट्टियां हैं। आप का बड़ा प्रेम है, आपका स्नेह है तथा मैं देख रहा हूं मुझे ऐसे लगता है कि यहां पर जो महानुभाव बैठे हैं, उनमें सच्ची साधना की आवश्यकता है, इस लिए जो मालिक ने, पिता जी ने कहलवाया वो कह दिया। मुझे बड़ा खेद है कि मैं ज्यादा नहीं ठहर सकता। 4 तारीख को वापिस जाना है, उससे पहले मुझे होशियारपुर जाना है जहाँ पिता जी का स्थान है यदि आप पिता जी के बारे में नहीं जानते तो जानिये।

वो परम सन्त व परम अवतार हैं और उन्होंने सारी दुनिया के लिए रास्ता बताया है। उनका भाग केवल साधारण लोगों के लिए नहीं है बल्कि उन लोगों के लिए है जो आगे जाना चाहते हैं। आप प्राईमरी कक्षा तक पढ़े हो यदि आप अध्यात्म के मार्ग में Ph. D. की डिग्री लेना चाहते हैं तो आगे की डिग्री के लिए पिता जी ने जो कहा वो सुनिये और फिर उसके बाद मेरे साथ बातचीत कीजिये। मैं फिर आऊंगा। इस समय अधिक बोलने का समय नहीं है इस लिए क्षमा चाहता हूं कि मैं आपको अधिक समय नहीं दे सका। लेकिन मैं सेवा के लिए हाज़िर हूं। अब भी यदि किसी महानुभाव को कोई सन्देह हो या कोई प्रश्न हो मैं उसके प्रश्न का उत्तर देने के लिए तैयार हूं, अभी कुछ थोड़ा सा समय है।

राधास्वामी कोई अलग मत मतान्तर नहीं है। राधास्वामी उस मालिक का नाम है, जो अनामी है। किसी की प्रश्न पूछने की कोई इच्छा हो तो पूछे।

प्रश्न :—आत्मा पवित्र होती है या पवित्र करनी पड़ती है ?

उत्तर :—गीता में भी आया है। कृष्ण जी ने कहा कि मन से, शरीर से, बुद्धि और इन्द्रियों से भी योगी योग का काम करते हैं। काम लेने में तप करते हैं। किस लिए ? आत्मा की शुद्धि के लिए। आपका प्रश्न बहुत अच्छा है कि आत्मा की भी शुद्धि होती है। क्या आत्मा की भी शुद्धि होती है ? यही प्रश्न है न आपका। मैं इसका उतर बताता हूं। आत्मा के दो अर्थ हैं—एक आत्मा का अर्थ परम तत्त्व है, इस लिए सन्तों ने उसे सुरत कहा है, उस तत्त्व को तो जो प्रसिद्ध है सुरत कहा है। सन्त जिसको आत्मा कह रहे हैं उसको जीवात्मा कहें। जीवात्मा वो जो जन्म लेता है। शुद्ध आत्मा सुरत वो है जो जन्म से हमारे साथ है लेकिन उसका जन्म नहीं होता। सुरत तो शुद्ध है लेकिन जीवात्मा जिसमें अनेक जन्मों के कर्म बंधे हुए हैं, जैसे हम किसी के ऊपर पर्दे पर पर्दे, पर्दे पर पर्दे डालते जाते हैं। शुद्ध जो वस्तु है वो तो सुरत है। इस लिए जीवात्मा के कर्मों के पर्दे को हटाकर शुद्ध करना चाहते हैं तो

जीवात्मा की शुद्धि होती है। आत्मा तो पहले ही शुद्ध है। आत्मा को कर्त्ता पुरुष समझो ऐसा नहीं।

दूसरी बात यह है कि लोग वर्षों अभ्यास करते हैं, कुछ नहीं होता। लेकिन घबराना नहीं चाहिए। क्यों ? पिछले जन्मों के पर्दे पर पर्दे, पर्दे पर पर्दे पड़े हुए हैं और वो अभ्यास द्वारा हट रहे हैं। जब आप बैठते हैं तो आपको कई बार प्रकाश दिखाई नहीं देता। चिन्ता मत करो। आपको मालूम नहीं कि आप साधना कर रहे हैं। आपके पर्दे चीर कर हटाये जा रहे हैं। गायत्री मन्त्र है। आप राधास्वामी मत के हो तो भी आप गायत्री मन्त्र से जा सकते हैं, यह दाता दयाल जी ने कहा है। यदि आप गायत्री मन्त्र का अर्थ समझें तो गायत्री मन्त्र का अर्थ भी उस परम ज्योति पर ध्यान लगाता है। गायत्री की सिद्धि होती है, परम सिद्धियाँ होती हैं। यदि आप गायत्री का जाप करते हैं गायत्री का एक मन्त्र होता है। इस मन्त्र का यदि चालीस दिन ब्रह्मचर्य रख कर जाप करें तो गायत्री प्रकट होती है। गायत्री प्रकट हो कर कहती है कि मांग, तू क्या मांगता है।

जो गायत्री सिद्ध कर लेता है उसके अन्तर दूसरे लोगों को आराम पहुंचाने की, उनके रोगों को दूर करने की शक्ति आती है। उसके अन्तर ही नहीं यदि एक व्यक्ति गायत्री को सिद्ध करता है तो सात पीढ़ियों तक उसके बच्चों में वो शक्ति रहती है, यह बात सत्य है। मेरे पितामह को ज्ञान था, उन्होंने गायत्री की तीन बार सिद्धि की थी, मैं कोई अहं से नहीं कह रहा बल्कि ठीक बात कह रहा हूं। उन्होंने तीन बार सिद्धि की थी और उन्होंने एक सौ बीस वर्ष की आयु पाई। उनकी आँखें नहीं थीं। लेकिन जो आते थे हमारे घर को नमस्कार करके जाते थे। यदि किसी के चोरी हो जाती थी तो उनको आकर कहते थे कि चोरी हो गई। तब वो कहते थे कि जाओ तुम्हारे घर में अमुक स्थान पर माल पड़ा हुआ है। बिना आखों के सिद्धि थी। मुझे इस बात का ज्ञान नहीं था कि सिद्धि का प्रभाव सात पीढ़ियों तक जाता है। मैंने इसका अनुभव एक बार किया। 1957 ई० में मेरी पत्नी को कोई दर्द हुआ। डा० से दवा ली उसने बड़ी सख्त दवा दी। दर्द एक सप्ताह के बाद फिर हो

गया । तीन चार मास के बाद मैं अपने भाई के घर जोधपुर में था । भाई के घर के पास एक जंगल सा था । रात को उठी, कहने लगी, मुझे बड़ा सख्त दर्द हो रहा है । मैंने कहा भई, क्या बात है ! यह मैं बचपन में करता था कि जब किसी को सिर दर्द होता तो उसके सिर पर हाथ रख कर मैं गायत्री का जाप करता तो वो ठीक हो जाता था । मुझे मालूम नहीं था कि ऐसा क्यों होता था । अब पता लगा । जब मेरी पत्नी को इतना दर्द हुआ तो मैंने सोचा कि उस समय भाई को उठाऊँ, कोई साथ नहीं, कोई गाड़ी नही । साईकल से डाक्टर को बुला कर लाऊँ यह भी कठिन है । मैंने कहा अब क्या करना है । मैंने उसको कहा कि तू लेट जा । मैंने उसकी टांग पर हाथ रखा तथा मैं एक घण्टा लगातार गायत्री का जाप करता रहा । अनुभव की बात बता रहा हूं उसको नींद आ गई । उसके बाद जब उठी ठीक थी । 1957 से आज तक गिन लीजिए कितने वर्ष हो गये कभी वो दर्द नहीं हुआ । लेकिन एक व्यक्ति ने 24 लाख गायत्री का जाप बड़े प्रेम से किया कुछ नहीं हुआ । गायत्री नहीं आई, दूसरी बार फिर नहीं आई,

तीसरी बार किया फिर नहीं आई। चालीस-चालीस दिन गायत्री का पूरा पाठ किया गायत्री नहीं आई। वहाँ से चला तो गायत्री मन्त्र बोलने की आदत पड़ गई थी। एक कदम बाहर हुआ तथा गायत्री का जाप किया तथा गायत्री प्रकट हो गई। माँग क्या माँगता है। उसने कहा—जब मैंने चौबीस बार किया उस समय तू कहाँ थी, अब एक मन्त्र में कैसे आ गई? उसने कहा—पीछे देखो। पीछे देखा तो चौबीस लाशें जल रही थीं। तुमने पिछले जन्म में चौबीस ब्रह्महत्याएं की थीं। फिर चालीस दिन के मन्त्र से एक हत्या गई। अब सभी हत्याएँ गई तो एक मन्त्र से उसका काम हो गया। यदि आपको शब्द नहीं होता तो घबराइये मत। दिखाई नहीं देता प्रकट नहीं होता, कैसी बात है। पर्दे पर पर्दा पड़ा हुआ है सब ठीक हो रहा है, धीरे-2 सब ठीक हो रहा है। मैं भी आपको यही कहना चाहता था। मुझे पिता जी ने सहयोग दिया है। मैं अपना अनुभव बता रहा हुं। सबको राधास्वामी।

———

सत्संग परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज, मानव मन्दिर होशियारपुर।

दिनांक 21-6-81

राधास्वामी! आप लोग आते हैं तथा मैं यह काम करता हूं। यह मेरे कर्म हैं। प्रकृति ने मेरा मस्तिष्क ही ऐसा बनाया है। मैं चाहता भी नहीं फिर भी अपने कर्मभोग वश और दाता दयाल जी की आज्ञानुसार घसीटा जा रहा हूं या मित्रो! दुर्भाग्यवश मैं अपने आप को सन्त सत्तगुरु वक्त कह कर दुनिया में प्रकट हुआ हूं। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्यों फ़कीर चन्द! यदि तू अपनी इज्ज़त, अपने मान तथा अपनी दौलत के लिए लोगों को ग़लत बात कहता है तो तू कुष्ठी होकर के मरेगा। लेकिन मित्रो! ऐसी बात नहीं है। सत्तगुरु सच्चे ज्ञान का नाम है।

इस वर्तमान समय में जिस सच्चे ज्ञान की आवश्यकता है, जिससे हमारा जीवन सुख और शान्ति में गुजर सकता है, मैं वह बताता हूं मगर इस बात का दावा नहीं करता कि मैं जो कुछ बताता हूं यही final हैं।

जो सत्त ज्ञान मैं देना चाहता हूं वह सत्त ज्ञान क्या है तथा सत्त ज्ञान देने का अधिकार किस को है ? सुखमनि साहिब में लिखा हुआ है :—

सत्तपुरुष जिन विवेकिया सत्तगुरु तिसका नाम,
ताके संग शिष्य उभरे नानक हरि गुन गान।

अर्थात् जिस व्यक्ति ने सत्तपुरुष को देख लिया, उसके दर्शन कर लिए हैं या सत्तपुरुष को जान लिया है, ऐसे व्यक्ति को सत्तगुरु कहते हैं। ऐसे व्यक्ति की सेवा, वन्दगी तथा संगत करो। फिर वह लिखते हैं कि सत्तपुरुष कौन है ? वह कहते हैं :—

जिह्वा एक उस्तुत अनेक, सत्तपुरुष है पूर्ण विवेक।

अर्थात् सत्तपुरुष को कई प्रकार से बताया गया है मगर वास्तव में वह सत्तपुरुष क्या है ?

सत्तपुरुष पूर्ण विवेक है। सत्संग से क्या मिलता है? विवेक मिलता है, सच्ची समझ मिलती है, सच्चा ज्ञान व सच्चा भेद मिलता है, जिसको समझ कर हम अपने लोक और परलोक दोनों जीवनों को सुधार सकते हैं। यही बात सनातन धर्म कहता है :—

बिनु सत्संग विवेक न होई, राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।

यही बात स्वामी जी ने कही है :—

सत्संग करते बहुत दिन बीते, अब तो छोड़ पुरानी बान,
कब लग करो कुटिलता गुरु से, अब तो गुरु को ले पहचान।
गुरु को मानुष मत जान, वह है सत्तपुरुष की जान।

तो सत्तपुरुष कौन हुआ ? वह पूर्ण ज्ञान तथा अनुभव वाला है। अर्थात् जिसको वह पूरा ज्ञान मिल गया उसका नाम सत्तगुरु है। अत: आज मैं आप लोगों को क्या ज्ञान देना चाहता हूं ? यहाँ कानपुर से एक सज्जन अमरनाथ सच्चदेवा आये हुए हैं। वह कहते हैं कि तीन वर्ष हुए उनको एक दिन साढ़े तीन बजे सुबह स्वप्न में पहले प्रकाश हुआ, फिर उस प्रकाश में एक महात्मा प्रकट हुए, उन्होंने कहा—अमरनाथ ! जागो। तुम्हारा समय आ गया है, जाग जाओ। उस दिन से वह बड़ा व्याकुल था तथा उस महात्मा को खोजता था मगर पता नहीं लगता था। किसी से

उसने उस महात्मा के बारे में पूछा। उसने कहा—पण्डित खुशदिल एडीटर 'देश सेवक' समाचार पत्र के पास जाओ, वह बता देगा। वह उसके पास देहरादून गया। पण्डित खुशदिल ने कहा कि जो महात्मा आया था उसका रूप बना दो। उसने कागज़ पर रूप बना दिया। उसने कहा—इस शक्ल के दो व्यक्तियों को मैं जानता हूं। एक पण्डित बूआदत्ता पीरेमुगाँ दिल्ली वाला तथा एक पण्डित फ़कीर चन्द है। यह बूआदत्ता के पास गया। वहां बैठा सोचता रहा। मन से आवाज़ आई कि यह नहीं है। अब वह मेरे पास आया है। वह कहता है कि वह महात्मा आप ही थे। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं क्यों भई, फकीर चन्द ! क्या तू इसे कहने के लिए गया था ? मैं नहीं गया। अगर मैं झूठ बोलूं तो मेरे शरीर को कुष्ठ पड़े।

2) इस प्रकार से किसी के अन्तर किसी गुरु का रूप प्रकट हो गया या लोग मरते समय कहते हैं कि मेरा रूप आया तथा उन्हें ले गया या कोई गुरु आ गया या राम, कृष्ण या कोई देवता आ गया। मैं जीवित बैठा हुआ कहता हूं कि मैं नहीं जाता और न ही ये दूसरे व्यक्ति जाते हैं। मेरे

सामने सब सन्त मानते हैं कि वे भी नहीं जाते लेकिन जनता को यह सच्ची बात नहीं बताते। मैं यह सब भेद क्यों खोल रहा हूं? क्योंकि मैं वक्त का सन्त सत्तगुरु हूं। सच्चाई बताना तथा सच्चा ज्ञान देना चाहता हूं। ऐसी ही बातों का पर्दा रख कर इन धर्म व पन्थ वालों, इन गुरुओं व गद्दी वालों ने मानव जाति को बांट दिया है तथा लूटा है तथा हम मूर्ख बन कर पागल हुए फिरते हैं।

3) एक वार्ता और सुनो। बैसाखी पर कुबेर नाथ के साथ एक व्यक्ति यहां आया था। कल उसका पत्र आया। उसने लिखा—बाबा जी! मैं आपके सत्संग से बड़ा प्रभावित हुआ और अपना हाल लिखा कि आप मेरे स्वप्न में आये तथा आपके साथ दो व्यक्ति और थे जिनको मैं नहीं जानता। हाँ, देखूं तो पहचान सकता हूं। आप मेरे मकान के आँगन में टहलते रहे तथा मुझे कहा कि तुम पापी हो, तुम को दण्ड मिलेगा, तुम्हारा मकान उड़ जायेगा, मकान को खाली कर दो। वह घबरा कर उठा, उसकी पत्नी भी सोई हुई थी, वह जागी।

उसने कहा—मेरे स्वप्न में तीन साधु आये। वे कहते हैं कि तुम्हारा मकान उड़ जायेगा। तुम ऊपर से नीचे उतर आओ। वे दोनों डर गये। ऊपर से सारा सामान उतार कर नीचे ले आये तथा मेरे चित्र को सामने रख कर बैठ गये। तूफ़ान आया, ऊपर की मंजिल उड़ गई। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तू उसे कहने के लिए गया था? मैं नहीं गया। यह कौन जाता है? मेरी बुद्धि काम नहीं करती। जितनी मेरी बुद्धि है मैं उतना ही कह सकता हूं। मैं इतना कह सकता हूं कि हम जो कुछ भी सोचते हैं, विचार करते हैं या बोलते हैं ये ख्यालात जो हैं यह सब ब्रह्माण्ड (atmosphere) में रहते हैं। ख्याल सूक्ष्म मादा है, मादा व्यर्थ नहीं जाता बल्कि शक्ल बदलता है। इस का प्रमाण मैं आपको बताता हूं। वर्तमान जर्मनी वैज्ञानिकों ने जर्मनी के सैनिट हाल में जो तक़रीरें (भाषण) को हुई थीं उनको रिकार्ड किया हुआ है। वह जो ख्यालात हैं वे शक्ल बनाकर जिसको जिस प्रकार की आवश्यकता होती है वे उसके अन्तर जाकर उसकी सहायता करते हैं। यह नहीं कि बाहर का कोई व्यक्ति आता है।

वे जो लोगों को पहले ख़यालात होते हैं इसी नियम के अनुसार ही जिसका मन शुद्ध, साफ व पवित्र होता है उसके अन्तर कई बार आकाश की शक्तियां किसी रूप में आकर के उसको हिदायत (आज्ञा) कर जाती हैं, यही विज्ञान का नियम है।

4) इस परिणाम के आधार पर मैं संसार को यह कह चला कि अपने विचार को ठीक रखो। यदि तुम दूसरों का बुरा चाहते रहते हो और दूसरे के साथ घृणा करते हो, किसी के साथ तुम्हारा झगड़ा है ये आपके ख्यालात् आसमान में रहेंगे तथा लोगों पर और तुम्हारे पर तथा दुनिया पर यह प्रभाव डालेंगे। अत: ऐ मानव! अपने मन से दूसरे से घृणा, द्वेष, हसद, शत्रुता इत्यादि निकाल दे। वरना तेरे ये विचार दूसरों की भी हानि करेंगे तथा तुम्हारी अपनी भी हानि होगी। इस समय मैंने जो अनुभव किया है वह यह है कि पहले हमारे पारिवारिक झगड़े होतेथे, लेकिन जब से यह Election System आया है घृणा बहुत बढ़ गई है। इस का परिणाम सिवाय मानव की ज़िन्दगी की तवाही के और कुछ नहीं होगा।

5) अत: मैं क्या कहना चाहता हूं कि जहाँ Cold war अर्थात् ठण्डी लड़ाई होती है उसका परिणाम खराब होता है । पाण्डव और कौरव दोनों जब बच्चे थे तब से ही मन में ग़ैरीयत रखते थे। उनकी Cold war का परिणाम महाभारत का युद्ध है। मेरे मन्दिर में जो व्यक्ति रहते हैं मैं उनको कहता हूं कि आपस में प्रेम से रहो। यदि तुम एक दूसरे के विरुद्ध घृणा और द्वेष रखोगे तो मन्दिर नष्ट हो जायेगा तथा तुम भी नष्ट हो जाओगे। मेरे पास यह ज्ञान है। यह ज्ञान जो कि विचार की शक्ति कहलाती है मैं संसार को देना चाहता हूं। वरना कर्म के फल का तो कभी नाश नहीं होता।

आज नपुती कल नपुती केसू फूले तब नपुती।

जब तक तुम सत्संग में जाकर बात को समझ कर अपने जीवन को बाअमल नहीं बनाते तब तक तुम्हें सत्संग से लाभ नहीं हो सकता।

सब ही आये सत्तगुरु आगे, दरस न पकड़ा वचन न लागे,
कहो उस सत्संग से क्या फल पाया, वक्त गया और जन्म गंवाया

इस बात को स्वामी जी अपनी वाणी में इस

प्रकार कहते हैं:—

काल ने जगत अजब भरमाया क्या क्या करूं बखान ।

काल तुम्हारा मन है । इस मन के चक्कर में ही सारा संसार भरमाया हुआ है अर्थात् भ्रम में आया हुआ है तथा प्रत्येक व्यक्ति अपने मन रूपी चक्कर में आया हुआ है । आज लोगों के अन्तर फ़कीर चन्द का रूप या कृष्ण का रूप या कोई और गुरु प्रकट हो गया या कोई और बात बता दी तो हम इस अज्ञान में आकर और वहाँ जाकर रुपया देते हैं । मगर गृहस्थियों को कोई सच्ची बात नहीं बताता तथा हम मूर्ख बन कर लुट गये । आप आते हो तो मेरे ज्ञान को समझो । ज्ञान का कोई मूल्य नहीं । गुरु-ज्ञान तो ऐसी वस्तु है कि यदि मिल जाय तो मानव को सारे जीवन के लिए स्वतन्त्र कर देती है । अतः क्योंकि हमारा मन काल है तथा इसको समझ नहीं है इसीलिए इस मन को गुरु परायण कहा जाता है मगर गुरु भी वह हो :—

सत्तपुरुष जिन विवेकिया सत्तगुरु तिसका नाम ।

सच्चा ज्ञान किसे प्राप्त होता है ? यह ज्ञान उसे मिलता है जो व्यक्ति अपने शरीर तथा मन को भूल

कर उसके ऊपर जो प्रकाश और शब्द की अवस्था होती है वहाँ तक जिसकी पहुंच है, ऐसे मानव का सत्संग करो तथा अभ्यास करो । ये दोनों बातें आवश्यक हैं। मेरे पास आकर, मेरे पास बैठने से तुम्हारा कल्याण नहीं होगा । तुम्हारा कल्याण तुम्हारे अपने अमल से होगा, अपने क्रियात्मक जीवन से होगा ।

जो साधन थे पिछले युग के, सो कलियुग में किये प्रमाण ।

कोई कहता है यज्ञ करो, कोई कहता है तप करो, कोई कहता है सुमिरन करो, ध्यान करो लेकिन वह कहते हैं कि ये प्राचीन युग के साधन थे आजकल ये काम नहीं देते । मैं पूछता हूं कि क्या यह ठीक है ? हां, ठीक है । मनमत होने से बचने और मन के चक्कर से निकलने के लिए गुरुभक्ति और गुरुज्ञान की आवश्यकता है ताकि मन के ऊपर चले जाओ । आप गृहस्थी हो । यदि इतना ऊंचे नहीं जा सकते तो घरों में शान्ति और प्रेम रखा करो । अपने मन के विचारों को शुद्ध रखो,विषयविकारों को कम करो।

माताओ ! बच्चों को मत मारो। जब आप बच्चे को मारती हो लेकिन उसे यह नहीं पता कि यह मेरा दोष है अतः उसके अन्तर से तुम्हारे विरुद्ध आवाज़ और विचार निकलेगा। अगर आप किसी बच्चे को मारो तो उसका मन दुःखता है। भय के मारे चाहे आपको कुछ न कहे लेकिन उसके मन से दुख निकलेगा। वह ख्याल ब्रह्माण्ड में रहेगा। वह विचार संसार को भी खराब करेगा तथा तुम्हें भी खराब करेगा। आजकल देखो संसार में क्या हो रहा है। यह क्यों हो रहा है ? यह सब हम व्यक्तियों के विचारों का परिणाम है। बिना सबब (कारण) के कोई बात नहीं होती। हमारे अपने ही इमाल (कर्म) हैं। जब मैं यह देखता हूं तो मेरी जान काँपती है। यदि मुझे यह ज्ञान न होता तो मैं बड़ा भाग्यशाली होता। आपको एक उदाहरण सुनाता हूं :—

मेरी एक साली थी। उसकी अपनी सास के साथ सदैव लड़ाई रहती थी। जब कभी मैं जाता तो कहता--ब्रह्मीये ! तू दुःखी होगी। मगर कोई न

सुनता। परिणाम यह हुआ कि डाका पड़ा सब कुछ चला गया। उसका पति पाँच वर्ष दमे के रोग से पीड़ित हो कर मर गया तथा आप T. B. से मर गई। उसकी सन्तान नालायक निकली। यह हो सकता है कि उनके कर्मों में ऐसा लिखा हुआ होगा मगर जो कर्म भी होता है उसका भी कोई कारण होता है। व्यक्ति ने मरना तो है ही लेकिन उसके मरने का भी कोई न कोई कारण होता है। मगर मन को काबू करना बड़ा कठिन है। इस मन को सत्संग और सुमिरन, ध्यान देते रहो ताकि यह ऊट-पटांग न सोचे तथा गन्दे विचार न रखे।

मूर्ख प्राणी मन सैलानी, सो अटके जल और पखान।

वह कहते हैं कि मानव मूर्ख है। मानव अपनी मनमर्जी करता है। जब से मुझे यह पता चला कि मन के विचार का यह परिणाम होता है मैं जहां तक हो सकता है अपने को काबू में रखता हूं, किसी के विरुद्ध संकल्प नहीं निकालता, किसी के विरुद्ध सोचता नहीं, किसी का बुरा नहीं चाहता, अपने घर वालों का भला चाहता हूं। जब मुझे पता नहीं था तब तो मैंने भी ग़लतियां खाईं।

बुद्धिमान, अभिमानी जो नर, विद्या, नारि के हुए गुलाम।

वह कहते हैं कि जो बुद्धिमान् व्यक्ति Why and How करते हैं वे बुद्धि में फँसे हुए हैं।

बाकी जो बीच के जितने न मूर्ख न अति बुद्धिमान,
जप तप व्रत संयम बहुत धोखे बीच अग्नि जले नादान।

मैं ब्राह्मण हूं। मेरे लिए यह वाणी ऐसी थी जिस प्रकार किसी के हृदय को चीरा जाता है। मैंने सारी आयु यह समझने के लिए खो दी लेकिन अब मैं समझता हूं कि यह ठीक है। मन के चक्कर में जब तक कोई कुछ भी करता रहेगा मन से तुम भक्ति करो, मन से तुम दान दो, मन से तुम जो चाहे करो, तुम्हारा आवागमन व जन्म-मरण नहीं छूटेगा। राधास्वामीमत का सम्बन्ध केवल आवागमन से बचाने के लिए है, निवृत्ति मार्ग के विचार से है, इस लिए यह खण्डन है। मानसिक ध्यान व भक्ति का भी इसीलिए खण्डन है, क्योंकि वह मन से बाहर तो नहीं गया मगर जो दुनिया में रहते हैं उनके लिए यह खण्डन ग़लत है। उनको चाहिए कि दान

भी करें तथा परोपकार भी करें, क्योंकि यदि वहां नहीं पहुंचते तो वह जो तुमने जीवन में दिया हुआ है वह तो उनको मिल जायेगा ।

देखो चरित्र काल कर्त्ता के, कोई सर कोई पैर रून्धान ।

काल क्या है ? तुम्हारा मन काल है । मन कितने विचार दौड़ाता है, कितनी बातें सोचता रहता है । अत: इस मन को क़ाबू करना है ।

भटक भटक भटकाया सब जग कोई लगाया ठौर ठिकान ।

ठौर ठिकाने कौन जायेगा ? वह जायेगा जो मन से ऊपर जायेगा ।

ऐसी हालत देख जगत की सन्त सत्तगुरु प्रगटे आन ।

जब मैं अपने आप को सन्त सत्तगुरु कहता हूं तब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि तुम्हारे पास सन्त सत्तगुरु वक्त कहने का क्या प्रमाण है ? मैंने वो भेद खोले हैं जो आज दिन तक किसी ने नहीं बताये ।

सच्चा ज्ञान देता हूं। तब मेरी अ
कि वाक़ई जो मैंने कहा सो ठीक
हस्तरेखाएं ही ऐसी हैं। आज ब
है। सारांश यह है कि अपने मन
सीखो। वास्तविक गुरु शब्द है तथा उसके चरण प्रकाश हैं। नादानो! सब कुछ तुम्हारे अपने अन्दर है। तुम स्वयं पूर्ण हो। अपने आप को भूल कर, हैसीयत छोड़ कर मैं-मैं करते मत फिरो। अपने मन को सोधो, सच्चे बनो। जो सच्चा बनता है परमात्मा उसकी सहायता करता है, प्रकृति उसकी सहायता करती है। मेरे अन्दर सच्चाई थी, रूप प्रकट हुआ तथा मुझे दाता दयाल की शरण में ले गया। सदैव एक उसका विश्वास रखो। वह तुम्हारा है, तुम उसके हो।

सर्व धर्म समभाव और विश्व शान्ति

डाक्टर ईश्वर चन्द्र शर्मा

(यह उस लेख का अनुवाद है जो कि डाक्टर साहिब ने दिल्ली में आयोजित विश्वधर्मों के सम्मेलन पर पढ़ा जाने के लिए अमेरिका से भेजा)

परम आदरणीय जैन मुनि श्री सुशील कुमार जी महाराज, मान्य अतिथिगण व इस सम्मेलन में पधारे डैलीगेट वृन्द! मैं अपना सौभाग्य समझता हूं कि समयानुकूल बुलाये गये इस महासम्मेलन में मैं यह सन्देश बतौर एक महान् सन्त के प्रतिनिधि के रूप में भेज रहा हूं। वह सन्त थे बीसवीं सदी के परम सन्त परम दयाल पण्डित फ़कीर चन्द जी महाराज, मानवता मन्दिर होशियारपुर वाले जो 12-9-81 को अमेरिका में शरीर छोड़ कर महासमाधि में लीन हुए। वहाँ वह मानवता के प्रचार के लिए पाँचवीं बार,

पिचानवें वर्ष की आयु में गये हुए थे। श्री परम दयाल जी महाराज सत्य के, विश्व प्रेम और दुःखियों पर दया करने वाले देवता थे। उनके सदुपदेशों.आध्यात्मिक अनुभव व दिव्य गुणों से भारत में व विदेशों में लाखों व्यक्तियों को लाभ मिला है व मिलता रहेगा। उनके शिष्य (अनुयायी) उनको चमत्कारी फ़कीर बाबा या पिता जी कहा करते थे।

उन्होंने विदेश में शरीर त्यागने से पूर्वी व पश्चिमी सभ्यताओं को परस्पर जोड़ने का काम किया है। क्योंकि वह यह भ्रम दूर कर गये हैं कि सन्त को केवल भारत की पवित्र भूमि पर ही शरीर छोड़ना चाहिए। उन्होंने अपने 75 वर्ष के गहरे अनुभवों का सार निम्नलिखित अमूल्य शब्दों में इस साईंस व धर्मों के दूसरे विश्वसम्मेलन में भेजा था, जो कि अमेरिका में 1981 ई० के जून मास में हुआ था :—

मेरी तीव्र इच्छा थी कि विश्व के आधार परम तत्व का अनुभव व ज्ञान प्राप्त करूं। अत: मैंने निरन्तर अनेक प्रयत्न किये, समाधियाँ लगाईं तथा

अन्त में मुझे वो अनुभव प्राप्त हुआ जो कि भिन्न-2 मतों के सन्तों को अनेक स्तरों पर प्राप्त होता रहा है। अब मैं उस अवस्था में हूं जिसे लोग सत्तपद के साथ एकता या परमात्मा या राम या कृष्ण या अईत यहूदी, बुद्ध, अल्ला, ईसा, वाहे गुरु, राधास्वामी इत्यादि नाम देते हैं। वास्तव में वह परम तत्त्व सभी नामों,रूपों व पन्थों से ऊपर की वस्तु है। वह है और सचमुच है। उसका कोई नाम नहीं है पर सभी नाम उसी की ओर ले जाते हैं। यह वैज्ञानिक सत्य है। मेरे सम्पर्क में आने वाले सत्संगियों को जिनका यह विश्वास था कि मैं परम तत्व हूं, उनको बार ऐसे अनुभव हुए, जो उन्होंने मुझे बताये कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट हुआ और उनकी सहायता कर गया तथा अन्य कई प्रकार के चमत्कार कर गया। परन्तु सत्य तो यह है कि मैं उनके अन्तर बिलकुल नहीं गया। न मैंने वो चमत्कार किये। तो इस प्रकार की अनेक घटनाओं ने मुझे यह मानने के लिए विवश कर दिया कि ये सारे चमत्कार उन सत्संगियों के अपने मन के विश्वास के ही परिणाम मात्र थे न कि मेरे किये हुए। इसी

प्रकार अन्य धर्मों के महात्माओं के अनुयायियों को भी जो-2 अनुभव होते हैं वो उनके गुरुओं के चमत्कार हैं। इस एक सच्चाई को छुपा कर रखने से कई स्वार्थी गुरुओं ने अपने शिष्यों को अन्धकार में रख कर अपनी पूजा करवाई हैं। इस सत्य को छुपाने का दूसरा भयानक परिणाम यह हुआ है कि मानव जाति भिन्न-2 सम्प्रदायों में बंट गई। प्रत्येक व्यक्ति अपने कल्पित व मन द्वारा बनाये हुए दृश्यों व अनुभवों को ईश्वरीय, दिव्य व गुरुप्रदत्त मान कर उसी को अन्तिम सच्चाई मानने लगा दूसरों से अलग हो बैठा तथा भिन्न पन्थ चला दिया। जिससे मनुष्य जाति के टुकड़े हो गये और सभी सम्प्रदाय आपस में शत्रु बन कर लड़ने झगड़ने लगे। इस प्रकार विश्वशान्ति भंग होती जा रही है। केवल वैज्ञानिक ढंग से धर्म का अध्ययन हो और इसे समझा जाय कि धर्म सत्य, परम तत्त्व सारे विश्व का आधार एक है न कि अनेक हैं[उसे अनुभव करो और सभी को परस्पर प्रेम भाव रखो, जीओ तथा जीने दो इससे उसके अन्तर समझ कर पृथ्वी पर ही स्वर्ग बन जायेगा]

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि सभी धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन स्वतन्त्र दिमाग से पक्षपात रहित होकर किया जाना चाहिए।

क्योंकि नफरत व क्रोध के संकुचित विचार संसार में फैलते रहे। कोई भी धर्म हमें हिंसा तथा घृणा की शिक्षा नहीं देता है। कितने खेद की बात है कि सभी धर्म एकता या शान्ति लाने की अपेक्षा अनेकता, अशान्ति, विभाजन की ओर लाये। दुनिया के ठेकेदार यह जानते हुए कि सत्यता एक है उन्होंने परमात्मक के एकपना और इन्सानी भाईचारे की कभी तुलना नहीं की Theory और Practice के अन्तर ने आपसी घृणा व द्वेष को बढ़ावा दिया है। यदि एक हिन्दू सच्चा हिन्दू है, जैनी सच्चा जैनी है, बौद्ध सच्चा बौद्ध है, क्रिश्चियन सच्चा क्रिश्चयन है और एक मुसलमान इस्लामधर्म का अनुयायी है तो विश्व में एकता तथा शान्ति होनी चाहिए। यदि सभी धर्मों के basic सिद्धान्तों को प्रतिदिन जीवन में अपनाया जाय तो एक-२ व्यक्ति सच्चा मानव बन सकता है। यही वह धर्म है जिसे परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज 'मनुष्य बनो' कहते थे और उन्होंने कहा कि मानवता, संसार के के सभी धर्मों और संस्थाओं का मार्ग दर्शनक या उद्देश्य होना चाहिए।

नकल पत्र हुजूर मानव दयाल जी महाराज जो उन्होंने डा. परशुराम जी को लिखा ।

3643 West39th Steeet
Cleveland Ohio 4+109 U. S. A.
October 28th 1081.

My dearest Parasram Ji, Radhaswami,

My heartfelt blessings and love for your family. I know how much you have been shocked by the sudden departure of Pita Ji. I still feel that he could have stayed in physical form with us for some time more. He seems to have changed his plan after coming to U. S. A. WE all missed you here as well as in Florida. I may give you one shocking news. Dear Shanda the daughter of Marsha and John Miller died suddenly within 24 days after Pita Ji 's departure' Psychics have told that she was the mother of His holiness Pita Ji in her immediate past birth. She came as Shanda to meet Pita Ji, accept him as his Guru and to accompany him to Param Dham. I will give you

the details. I am bringing your picures with her and with Pita Ji.

I am coming to Delhi for Satsang on the 16th December and to Hoshiarpur on the 25th or 26th to give Satsang on the 27th December. If you have time to come to Delhi, please let me know soon. You must meet me so that I may give you the details of the orders,His Holiness gove to me.My coming permanently to Hoshiarpur should be considered to have begun from 25th December 1981. I have already dedicated my life and time for the work entrusted to me by Pita Ji. I feel his spirit in every atom of my body, every breath of life and every thought of my mind with a feeling of complete identification with Pita Ji every moment. You shall have to cooperate with me as you promised on your two last visits here. I will discuss details with you. Honesty and truth must be our guidance. I will always siacerely and honestly extend my love to every one. Many persons do not know that I dwell most of the time in the Param Tat va oblivious of worldly environment. I think every one should not know it. I am really flowing in the Para Dhara most of the time. I have no doubt renounced the World (Tarak-E Dunya) and My Status as International Professor (Tarak-e-Ukba). I have not yet fully renounced God (Tarak-e-Maula). Pita Ji s' last words to me (recorded) were, "The time will come when for you there will be no I or You· But before

that you have to do GREAT WORK." Please convey my Radhaswami and regards to Shri Bhagat Ji, Dr. Bhardwaj, Dr. Jaura Ji, Shri Pardesi and all. Hoping to see you soon.

With deepest love and blessings,
Yours in Param Faquir Tattva,
(Manav Dayal.)

आत्मानुभूति

दुर्गा दास चमन

[तीसरी किश्त]

सामने से एक मनुष्य कहीं जा रहा था। समझाया गया कि संसारी कार्य पूरा करो । एक मिनट भी खोया न जाये ध्यान, समाधि प्रादि भी कार्य ही हैं, किन्तु कार्य करते हुए उस में मन न दो। सब कुछ चेतन पर छोड़ दो । आप द्रष्टा बन जाओ कोई भला या बुरा नहीं । उस के अपने नियम हैं जो अटल हैं । उन में कभी वेशी नहीं होती । हो भी सकती है जो परम पुरुष की दया पर है । दया का पूर्ण पात्र बनने के लिए बड़े परिश्रम व कुर्वानी की आवश्यकता हैं । इस के लिए शरीर के प्रर्भात् स्थूल, सूक्ष्म, कारण व महाकारण के सब बोधभाम सामर्पित

करने पड़ते हैं । दूसरे शब्दों में सात्त्विक, राकसिक व तायसिक गुणों के ऊपर गुणातीत अवस्था में जाना पड़ता है । सब पूछा जाये तो गुणातीत कहना अहंकार का शब्द है । सब गुण चेतन को अपर्ण करने पड़ते हैं । स्वयं खाली होना मड़ता है ।

पीठ के पीछे से एक मस्ती भरा बैल हुंकार मार रहा था । समझया गया कि काम भी बुरा नहीं । इष्ट पर अर्थात् पूर्ण चेतन के आगे समार्पित हो जाओ वह तुम्हारी प्रकृति को भुगता कर दूसरे शब्दों में कर्म कटवा कर ऊपर खींच लेगा क्योंकि समर्पण द्वारा तुम उस का रूप जो वन चुके हो । अब जाओगे कहां ।

चट्टान पर बैठा था 6-30 सायंकाल का समय था । सामने सूर्य की धूप, नोचे वृक्ष ही वृक्ष, वायु द्वारा लहराते हुए पत्ते, नाले में धीमे स्वर से बहते हुए पानी की ध्वनि और कहीं पत्थरों पर जमी हुई कोई प्रकृति का अनुपय दृश्य दर्शा रही थी । ऐसे में

जब विचारों को सूक्ष्म से कार[illegible] ओर ले जाया गया तो समझाया कि—

साधना में बैठा हुआ मानव अपने विचार को जिस भी केन्द्र पर एकाग्र कर के सूक्ष्म से सूक्ष्म बना दे वह उतना ही शक्तिशाली हो जाता है। इस तरह किसी एक केन्द्र पर लगातार अटूट अभ्यास करने से उस केन्द्रित शक्ति का स्वामी भी बन सकता है। किन्तु शक्ति का पैदा होना या पास होना अहंकार को पैदा करना है। ऐसा व्यक्ति बिना शक्ति का प्रयोग किये रह नहीं सकता। शक्ति का यह नियम है कि ऊर्जा स्थिर नहीं रहती, वह गतिशील है अत: गति में आयेगी और कोई न कोई काम करेगी। अत: इस समय या आने वाले समय में साधकों को मानव कल्याण हेतु शक्ति का प्रयोग करना चाहिए। जो साधक आत्म समर्पण योग अपनाये हुए हैं, उन्हें भी मानव कल्याण हेतु प्रार्थनाएँ करनी चाहिएँ। तभी युग परिवर्तन का कार्य सुलभ होगा।

फिर अपने आप ही यह प्रार्थना उमड़ पड़ी "हे प्रभु, परम पिता, सत्त पुरुष, राधास्वामी दयाल

शुद्ध चेतन स्वरूप इस समय मानवता चीख उठी है। तामसिक विचारों ने हर स्थान पर वायु मण्डल को बुरी तरह से घेर रखा है। मनुष्य, मनुष्य को भेड़ वकरी के समान भी नहीं समझता। भूमण्डल पर ऐसे-२ अस्त्र बिछ गये हैं जो एक सैकण्ड में वायु-मण्डल को ज़हरीला कर के सारी सृष्टि का नाश कर सकते हैं। यह सच है कि यह सब मानव की अपनी अर्थात् अपने ही विचारों की उपज है। फिर भी हम अज्ञानी हैं। तेरे बच्चे हैं। इतनी शक्ति दे कि इन का सात्त्विक भाव में पूरी शक्ति से मुकाबला कर सकें और मानवता की पूर्ण रक्षा कर सकें। आने वाले बच्चों में ऐसे भाव भर सकें कि वे एक-एक मानव कल्याण हेतु कार्य करें और इस भान्ति से संसार के कोने-२ में जा कर एक नये मानव धर्म का प्रचार हो,जिस में सब के कल्याण की भावना रहे एक दूसरे के लिए विना स्वार्थ के कार्य हो। मनुष्य ही नहीं किन्तु पशु, पक्षो भी वैर भूल कर मनुष्यों के घरों में आप आ कर स्वतन्त्र रूप से भ्रमण कर सकें।"

[शेष पुनः]

हजूर मानव दयाल जी महाराज का पत्र
डा० के. एल जौड़ा के नाम

3643 west 39th Street.
R. S. Cleveland Ohio 44109.
My dear K. L , February 15th 1982

Radha Swami, love and blessings of Param Dayal Ji,When I write to you blessings of Param Dayal Ji, I really mean it, because Pita Ji the truest divine Avatar of Param Tattva was, is and will ever remain the real source of blessings for every one who remembers him from the core of his heart, much more so for one, who has had the opportunity of being his physicarl orbit and whom he personally allotted the duties. In this sense you and every one who is associated with Manavta Mandir in any capacity is blessed and would continue to be blessed, if he or she honestly and sincerely follows the order of Pita Ji. It is for their own spiritual benefit that they should work wholeheartedly as they were directed by Malik-E-Kul who was so compassionate to give them the honour and opportunity of working for this sacred temple, the future of the uplif-

tment of whole humanity which is sunk in the mire of hatred and selfishness and which according to Pita Ji's words is bound to come back to the true path of Manavta and Satyata after paying for its own negative attitudes in some form of suffering and destruction. He said that after such catharsis the world will listen to this truth and march towards the spiritual goal.

The Trustees are lucky to have been associated, because they should realize that they have been given the responsibility of Faqir Trust. What is a truat ? Trust means Dharover,Treasure and Nidhi.This is a Spiritual treasure, spiritual Nidhi and it is most sacred. Please convey to my dearest and most respected Trustees that we should sincerely and honestly work day and night with sacred attitude to see that the noble mission of Jag Kalyan is furthered every day, every hour and every minute by our love, dedication and self surrender to the wishes of Param Dayal Ji Maharaj. We should always remember that His Avatar as predicted by Data Dayal Ji Maharaj had the sole purport expressed in the oft quoted verse

Tu To Aya Nar Dehi Men Dhar Faqir Ka Bhesa,
Dukhi Jiva Ko Ang Laga Kar Le Ja Guru Ke Desa.
Tin Tap Se Jiva Dukhi Nibal Abal Agyani,
Tera Kam Daya Ka Bhai Nam Dan De Dani.
Tera Rup Hai Adbhut Acharaj, Teri Uttam Dehi,
Jag Kalyan Jagat Men Aya Param Dayal Sanehi.

My humble duty is to carry on his work. What is his work ? It is two fold. Giving true knowledge of the

positive path of love to the masses to le·
by having full faith in one form of Mali·
worldly benefit with constant reminder that
cation they would be able to march toward Paramarth if
they so desire. The second aspect is to set an example by following the instructions given to me for my highest spiritual development through a pure, honest and divinely inspired love which is merging me every day in Pita Ji, s divine form and freeing me from worldy ties and sharing that inner experience with all and giving inspirations to those who deserve True Gyan. You may publish this letter. I am very strictly and sincerely practicing according to His orders every moment and growing to be worthy of His expectations. Whoever wants to join this noble mission is worship-worthy for me. Let me end this letter with a verse for you:—

KUNDAM TU KUNDAN BHAYA,
SATYA TERA VYAVHAR
SATYA PREM KE MARG SE,
HO JA BHAV KE PAR

Radha Swami to all

Yours in Him,

Manav

P. S.

I hope that you have received my letters and monthly messages by now. you will be glad to know that S. Chand and Company Delhi has agreed to Publish the book सिद्ध स्त पुरुष फकीर बाबा befor Baisakhi you Should publish this news in Manavta Mandir.

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ। 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ। 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ। 7. ਨਾਮ ਦਾਨ।

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans. 2. A Word to Canadians.
3. Manavta the true religion.
4. Religious Research. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth.
8. Science of God Realization.
9. Realization of Reality. 10. JeewanMukti.
11. Art of happy living. 12. Key to Freedom.
13. Broadcast of Reality in America.
14. Yogic Philosophy of Saints.
15. Nam Dan. 16. Autobiography of Faqir.
17. Republic day Message 26-1-81. 18. Radha Swami Dayal's Divine Message on Self Realization.

हिन्दी भाषा में पुस्तकें

1. अनुभवसार। 2. सन्तमत लेखमाला भाग 1
3. सन्तमत लेखमाला भाग 2

—o∵o—

हज़ूर मानव दयाल जी महाराज का

मासिक सन्देश

मेरे प्यारे सत्संगियो !

राधास्वामी, परम दयाल स्नेही !

आज जब मैं अभ्यास से उठा तो ऐसे लगा कि परम दयाल जी महाराज मुझे इस सन्देश को आप तक भेजने का हुक्म दे रहे हैं। जैसा कि मैंने अपने सभी सत्संगों में आपसे कहा है कि मुझे ऐसा लगता है कि जो कुछ मैं कह रहा हूं, लिख रहा हूं या सोच रहा हूं, वह उसी परम तत्त्व, परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज की प्रेरणा से ही कर रहा हूं। सन्तमत में गुरु का स्थान इस लिए सबसे ऊँचा माना गया है कि गुरु ज्ञान दे कर शिष्य को अपने ही जैसा बना देता है। मैं यह इस लिए लिख रहा हूं कि मैंने अपने परम गुरु को यह वचन दिया

था कि जो कुछ मैं अनुभव करूंगा, उसे पूरी सच्चाई से ही आपके सामने रखूंगा।

मैंने परम दयाल जी को यह भी बताया था कि मैं उनको ऐसा वचन किसी पर एहसान करने के लिए या दुनिया में शोहरत पाने के लिए नहीं दे रहा, बल्कि अपने जीवन को सफल बनाने और निज धाम को जाने के लिए ही दे रहा हूं। इस पर परम दयालु पिता जी ने मुझे हँस कर कहा था कि मैं इस वचन को लिखित रूप में दूं। जब मैंने परम गुरु की इस आज्ञा का पालन किया तो उन्होंने प्रसन्न हो कर मेरे घर क्लीवलैण्ड में मुझे आशीर्वाद देते हुए कहा, मानव! तुम गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए यक़ीनन निज धाम को पहुँच जाओगे।"

मेरे सत्संगों और सन्देशों में जो कुछ सच्चाई या अच्छाई आपको दीखती है वह यक़ीनन मेरे परम दयाल जी की ही है और यदि उनमें कुछ बुराई या खटकने वाली बात है वह मेरी ही है। प्यारे सत्संगियो! मैं परम दयाल जी को सब जगह

हाज़िर नाज़िर समझ कर आपसे वादा करता हूं कि मैं सदा सच्चाई, प्यार और इन्साफ़ पर ही चलूंगा और आप सब को भी इन तीनों असूलों पर चलने की प्रार्थना करता रहूंगा। सच्चाई पर ही पवित्र मानवता मन्दिर की नींव रखी गई थी, सच्चाई पर ही परम दयाल जी के जीवन ने इस मानवता मन्दिर को सारे विश्व का केन्द्र बनाया है और हम सब सच्चाई की खोज में ही ध्यान सिमरन करते हैं। ईश्वर सदैव सत्य है और सत्य रहेगा। यही बात श्री गुरुनानक देव जी ने भी कही है, "नानक है वी सच्च, होसी वी सच्च।"

अब सवाल उठता है यह सच है क्या ? यह सच या सत्यता वही है, जो हमारा आद है, परम तत्त्व है, अनामी धाम है जहाँ से हम सब आये हैं और कर्म-भोग भोगने के बाद जहां हमें वापिस जाना है। इसी परम तत्त्व 'सत्य' से निकल कर सभी जीव युगों से लोक-लोकान्तरों में भटक रहे हैं। इसी परम तत्त्व 'सत्य' से हमारे गुरु परम दयाल जी, हम सब जीवों के कल्याण के लिए फ़कीर के चोले में इस पृथ्वी पर

आये और परम सन्त के रूप में हमें चेतावनी दे कर उसी तत्त्व में ही समा गये। उन्होंने कई बार खुद ही कहा है "मैं सत्य का अबतार हूं।" परम दयाल जी महाराज केवल एक मामूली सन्त या सद्गुरु नहीं थे बल्कि वह अवतारी सन्त और अवतारी गुरु हैं। उनका शरीर में रहना या न रहना, उन जीवों के कल्याण करने में कोई बाधा नहीं डालेगा जो उन्हें सच्चे दिल से याद करते हैं। उनका सच्चा रूप तो सब जगह मौजूद है और उनकी शक्ति अब पहले से भी अधिक बढ़ गई है, क्योंकि वे अब परम तत्त्व में मिल कर परम तत्त्व हो गये हैं। जब तक वह मानव के चोले, फ़कीर के चोले में थे वह अपने सगुण रूप से जग के कल्याण में लगे हुए थे। दाता दयाल जी ने उनके विषय में कहा था, "तेरा सगुन रूप है सन्त-मते का सार।"

मैं एक दिन आपको इस विषय पर पूरा सत्संग दूंगा। यहां पर तो मैं केवल इतना बता देना चाहता हूं कि उन्होंने अपने सगुण रूप से, जो जग कल्याण

का काम अपने ऊपर लिया था, उसी को करने के लिए ही मुझे आज्ञा दी थी और मनुष्य मात्र की सेवा करने के लिए तथा दु:खियों पर दया करने के लिए ही उन्होंने मुझे 'मानव दयाल' का नाम दिया था, वही काम करना मेरे जीवन का लक्ष्य है। अब तो परम दयाल जी का सगुण रूप भी हर जगह मौजूद हो गया है। कई सत्संगी मुझे लिख रहे हैं कि उन्हें परम दयाल जी का सगुण रूप मेरे में दिखाई दे रहा है। कुछ सत्संगियों ने मुझसे पूछा है कि वह किस रूप का ध्यान करें, फ़कीर के रूप का या मानव दयाल के रूप का ? ऐसा प्रश्न उन्होंने इस लिए किया है कि परम दयाल जी तो अब शरीर को छोड़ कर परमधाम को चले गये हैं और सन्तमत के मुताबिक जीवित गुरु के रूप पर ध्यान लगाना ज़रूरी है। ऐसे सत्संगियों को मेरा जवाब यह है कि परम दयाल जी अवतारी सन्त होने के नाते सगुण रूप में भी हर समय और हर जगह प्रकट हो रहे हैं। उनका सगुण रूप आप सब की सदा ही वैसी ही मदद करता रहेगा जैसी कि वह अब तक करता आया था। आप लोगों को पूरे यक़ीन के साथ

परम दयाल जी को हर जगह हाज़िर नाज़िर समझ कर ध्यान सिमरन करना चाहिए। वह हर समय आपके साथ हैं और रहेंगे। वह सदा आपकी रक्षा करेंगे।

मेरे ज़िम्मे जो उन्होंने अपनी जगह पर काम करने की ज़िम्मेवारी सौंपी है, उसके मुताबिक मेरा यह पहला फ़र्ज है कि मैं आपको बार-2 सत्संग दे कर आपके मन के सब संशयों को दूर कर आपको परमधाम की ओर बढ़ने का रास्ता दिखाऊं। जीवित गुरु की महिमा केवल इस लिए ही मानी गई है कि वह आपके सामने बैठ कर आपके मन में पैदा होने वाले सभी संशयों का निवारण करे। यदि वह आपके संशयों को ही दूर नहीं कर सकता, तो वह गुरु ही नहीं है। प्यारे सत्संगियो! यक़ीन करो मेरे गुरु की कृपा से मेरे मन के सभी संशय समाप्त हो गये। परम दयाल जी ने मेरे घर पर अनेक बार मुझे अकेले में कई गूढ़ सत्संग दिये। मैं उनसे बहुत सवाल करता रहा और उन्होंने मुझे सच्चा ज्ञान

दे कर मेरे मन के सभी संशयों को दूर कर दिया अब मेरे मन में पूरी शान्ति और सन्तोष है ।

जहाँ तक परम दयाल जी के सगुण रूप के द्वारा आपके दु:खों को दूर करने का सवाल है, मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि पिता जी ने मुझे एक बार हिदायत दी थी और लिखा भी था, "जब कोई दु:खी जीव तुम्हारे पास आये और मदद मांगे, तुम अपने परम इष्ट का सिमरन करते हुए या प्रकाश में ध्यान लगाते हुए सच्चे दिल से जो कुछ कह दोगे वही होगा । लोगों की मनोकामनाएँ पूरी हो जायेंगी ।"

मैं पिता जी की इस हिदायत पर कई सालों से चल रहा हूं और उनकी कृपा से बहुत से अमरीकी तथा भारतीय सत्संगियों को मेरे रूप के प्रकट होने के अनुभव हो रहे हैं । 1980 में जब पिता जी मेरे क्लीवलैण्ड के घर में ठहरे हुए थे मैंने एक बार उनसे इस बात का जब ज़िक्र किया, तो उन्होंने मुझसे प्यार से पूछा, "मानव ! सच बताओ क्या तुम सत्संगियों

की मदद के लिए उनके पास जाते हो या तुमको यह ज्ञान होता है कि तुम जाते हो ?"

मैंने उनके चरण छू कर कहा, "मैं बिल्कुल ही नहीं जाता और न ही मुझे इसका ज्ञान होता है।" इस पर उन्होंने मुझे हिदायत देते हुए कहा, "कभी भी यह अहंकार मत करना कि तुम लोगों को प्रकट हो कर उनकी मदद करते हो। तुम तो केवल निमित्त मात्र ही हो, मालिक खुद ही तुम्हें आगे बढ़ाने के लिए ही यह काम करा रहा है । अहंकार तुम्हारी तरक्क़ी रोक देगा।"

पिता जी अवतार हैं उनके शब्द कभी झूठे नहीं हो सकते। मैं उनकी हिदायत के मुताबिक अपने को मालिक का निमित्तमात्र मान कर ही काम कर रहा हूं और आप सब से सच्चे दिल से प्यार करता हूं। परम दयालु पिता जी की अपार कृपा से सत्संगियों को लाभ पहले से भी अधिक हो रहा है। भारत से तथा यहाँ से मुझे लगभग तीन चार पत्र रोज़ आ रहे हैं। उन पत्रों में से भारत से एक सत्संगी के पत्र

की कुछ लाईनें मैं यहाँ लिख रहा हूं :—

"परम पूजनीय प्रातः स्मरणीय श्री सद्‌गुरु जी महाराज श्री मानव दयाल जी !

आपके चरण कमलों में साष्टांग प्रणाम !

आपने 12-12-81 की रात को आगरा में अपनी दया कर अपने संसर्ग में रख कर ऐसा निहाल किया है कि अब हरदम ऐसे लगता है कि जैसे अंग संग हों। मेरे सिर पर कई बार जब आपने कर कमल फिराया, सो ऐसा लगता है कि मानों मनों वज़न उतार लिया गया। आपके प्रवचन में कई बार के आशीर्वाद से ऐसे लग रहा है कि जैसे किसी महान् वरधारी हिमायती ने साथ राह लिया हो। स्वर्गीय हज़ूर श्री परम दयाल जी तो त्रिपुरी पर ही विराजमान रहते हैं, किन्तु आपकी पूरी रव साथ क्यों लग गई है। इसका मात्र कारण यह समझ में आया कि आप श्री हज़ूर श्री परम दयाल जी महाराज के के हुक्म के साथ हो दीन, हीन, ग़रीब दुःखियों और अज्ञानियों के उद्धार के लिए ही कर्मभूमि पर उतर आये हैं।"

ऐसे-2 कई पत्र रोज़ आ रहे हैं और मैं सत्संगियों का बहुत ही आभारी हूं। वे मेरे गुरु के भी गुरु हैं, उनसे मुझे नित्य नया ज्ञान प्राप्त हो रहा है। पिता जी ने मुझे सत्संग कराने का काम इस लिए नहीं सौंपा था कि मैंने वेदों, शास्त्रों, उपनिषदों और दुनिया के सभी धर्मों को पढ़ा पढ़ाया है और उन पर कई किताबें भी लिखी हैं। मेरे जैसे अपने को विद्वान् कहने वाले लाखों भटकते हैं। मैं तो समझता हूं कि परम दयाल जी के सम्पर्क में आना तथा उनकी मुझ पर अपार दया का होना मेरे पिछले जन्मों के कर्मों का ही फल है। पिता जी कई बार मुझे कहा करते, "मानव ! मैं तो तुम्हें बुलाने नहीं आया था, क़ुदरत ने तुम्हें मेरे साथ लगा दिया ताकि यह मानवता धर्म संसार में फैले।"

मार्च 1981 में पिता जी ने मुझे उर्दू में एक पत्र लिखते हुए कहा, "मैं दो महीने के दौरे के बाद होशियारपुर पहुंचा। पुस्तक के लिखे हुए तुम्हारे दो अध्यायों को मुझे पढ़ कर सुनाया गया। उन को सुन कर मैं कहां पहुंच गया। अब मुझे पक्का यक़ीन

हो गया है कि तुम्हारी ज़ाते पाक से यह मानवता का धर्म सारे संसार में फैलेगा, फैलेगा, फैलेगा। अब मैं बहुत ही खुश हूं। अब यदि मैं आज भी चोला छोड़ दूं तो मुझे ज़रा भी दुःख नहीं होगा"।

उनके ये शब्द सदा मेरे कानों में गूंजते रहते हैं। अगस्त 1981 में मर्सी हस्पताल में जब मैं पिता जी की सेवा में था पिता जी ने उस समय मुझे ख़ास ख़ास हिदायतें दीं। मैंने एक दिन उनसे पूछा, "पिता जी ! 1959 में आपसे मिलने से चार वर्ष पहले, जब मेरे अन्तर में आपका रूप प्रकट हुआ था तो क्या वह पिछले जन्मों के संस्कारों के कारण था ? उन्होंने जवाब दिया "हां मानव दयाल !"

पिता जी ने लोक और परलोक दोनों पहलुओं को सामने रखते हुए मुझे सत्संग कराने की हिदायत दी है। जिन सत्संगियों का ध्यान अभी नहीं बनता, मन इधर-उधर भटकता रहता है, उनको चाहिए कि वे समाधि में बैठने से पहले मन को स्थिर करने के लिए परम दयाल जी के रूप का ध्यान करें। वैसे

तो दाता दयाल जी, परम दयाल जी तथा मानव दयाल में कोई अन्तर नहीं है। ये सभी रूप समय-2 पर जग के कल्याण के लिए परमधाम से भेजे जाते हैं। आपकी श्रद्धा तथा पिछले जन्मों के कर्मों के मुताबिक ही आपका किसी ख़ास जीवित गुरु से सम्बन्ध होता है। मैं आपको यक़ीन दिलाता हूं कि आप जिस रूप को भी सच्चे दिल से अपना बाहरी गुरु मानेंगे और उसे मनुष्य न समझ कर परम तत्त्व का अंश मानेंगे आपके सब काम सिद्ध हो जायेंगे और आप धीरे-2 परमार्थ की ओर भी बढ़ेंगे। यह सब मैं अपने अनुभव के बाद ही आपसे कह रहा हूं।

जो अभ्यासी सुरत शब्द योग की साधना में आगे बढ़ चुके हैं और जिन्हें कभी-2 बाहरी गुरु का और कभी प्रकाश और शब्द का अनुभव होता रहता है, उन्हें चाहिए कि वे प्रकाश और शब्द पर ही ध्यान लगाएं और मन में यह प्रबल इच्छा करते रहें कि मालिक उन्हें जल्दी मोह जाल से छुड़ाये।

कर्म तो सबको भोगने पड़ते हैं किन्तु गुरु की कृपा और लगातार सत्संग करने से ये कर्म स्वप्नों में भी कट जाते हैं। यह गुरु कृपा और सत्संग की महिमा है और इसीलिए ही जीवित गुरु को अपनाना ज़रूरी माना गया है। इस लोक को सुधारने के लिए सबसे प्यार करना, किसी से नफ़रत और ईर्ष्या न करना; किसी की निन्दा न करना, सत्य बोलना आदि मन को शुद्ध करने के लिए बहुत ज़रूरी हैं। सभी जीवों में परम तत्त्व मौजूद है, इस लिए उस मालिक से लौ लगाने के लिए सभी जीवों में मालिक को हाज़िर नाज़िर समझ कर उनसे प्यार करना मालिक को प्यार करना है। इसी भावना को दिल में रखते हुए घरों, देशों तथा संसार भर में शान्ति रखी जा सकती है।

मन को शुद्ध करने के लिए पिता जी सदा हमें हिदायतें देते रहे हैं। जब तक मन शुद्ध नहीं हो, मोक्ष के लिए समाधि कभी कहीं लगानी चाहिए।

बिना मन की शुद्धि के सुरत शब्द का अभ्यास भी नहीं करना चाहिए। इससे बहुत नुकसान होता है, क्रोधी व्यक्ति का क्रोध बढ़ जाता है, कामी का काम तथा अहंकारी का अहंकार। इस लिए ही कहा जाता है कि बाहर सत्संग में जाओ। बार-2 सत्संग में जाने से धीरे-2 मन की शुद्धि होती रहती है। हें मेरे प्यारे सत्संगियो! आप साधना के जिस स्तर पर भी हैं, मेरी इन बातों का ध्यान रखें। आपके मन में यदि किसी प्रकार की शंका है, उसका निवारण करने के लिए मुझे हर समय पत्र लिख सकते हैं। कुछ ही दिनों में मैं आपकी सेवा में हाज़िर हो रहा हूं। मालिक आपको सुखी रखें। सब को राधास्वामी।

आपका—

मानव

'नमो नमो'

1. नमो सन्त सत्य पुरुष कामिल फ़कीर,
नमो रहवरे राहे हक़ बेनज़ीर।

2. नमो सत्य प्रकाश पूर्ण धनी,
नमो अनुभवी सन्त ज्ञानी गुणी।

3. नमो सत्य वक्ता नमो गुण निधान,
नमो पुरुष उत्तम नमो ज्ञानवान।

4. नमो सत्तगुरु सन्त श्री राधास्वामी,
नमामी नमामी नमामी नमामी।

5. नमा गुरु परम दयाल ऐ दस्तगीर,
नमो नाथ दरवेश के मीर पीर।

—दरवेश

'फ़कीर आ गया'

लेखक:—दरवेश जालन्धरी

1 बहार आ गई जब फकीर आ गया,
खुदा धरके नर का शरीर आ गया।
2 बूए गुल से महक उठा सारा जहाँ,
चमन में गुले बेनज़ीर आ गया।
3 जो आया गले से लगाया उसे,
ग़रीब आ गया या अमीर आ गया।
4 अन्धेरा मिटा चांदनी खिल गई,
सिहा रात में बदरे मुनीर आ गया।
5 दया कर के पथ भ्रष्ट जीवों की खुद,
पकड़ने को बांह दस्तगीर आ गया।
6 छुड़ाने हमें जेलखाने से जग के,
परम दयाल बन कर असीर आ गया।
7 सच्चाई का पैग़ाम जीवों को देने,
यो दरवेश का मीर पीर आ गया।

———

हजूर मानव दयाल सन्त आई. सी. शर्मा के चरणों में निवेदन

(जा नशीने फ़कीर)

1. तुम्हीं हो सही जा नशीने फ़कीर,
तुम्हीं पर था पूरा यक़ीने फ़कीर।
ऐ दरवेश मुरशिद में वख़्शिश से अपनी,
अता करदी तुझ को जमीने फ़कीर।

2. तुम्हीं हो सही तरजमाने फ़कीर,
असल सरबरा कारवाने फ़कीर।
करो रहनुमाई रहख़ाने हक़ की,
इसी से है दरवेश शाने फ़कीर।

3. तुम्हीं बाग़वां गुलिस्ताने फ़कीर,
तुम्हीं रौनक़े आसताने फ़कीर।
तुम्हीं हो अब दरवेश संगत के वाली,
तुम्हीं दर असल हो निशाने फ़कीर।

दरवेश जालन्धरी

सूचना

जिन जगहों के सत्संगियों की प्रार्थना आई है उसे स्वीकार करते हुए हजूर मानव दयाल जी महाराज बैसाखी के पश्चात् निम्नलिखित स्थानों पर सत्संग देंगे। पूरा प्रोग्राम 10 अप्रैल को निकलने वाले "मानव मन्दिर" में छप जायेगा। यह प्रोग्राम लगभग 20 अप्रैल से शुरू होगा:— अमीन (दो दिन), बिलागी (चार दिन), बनवारी पुर (एक दिन), मथुरा (दो दिन), खण्डेहा (एक दिन), मोदीनगर और मुहम्मदपुर (तीन दिन), अलीगढ़ (तीन दिन), उज्जैन तथा तराना (तीन दिन), टुण्डी जिला चम्बा (दो दिन), मिश्रिक तीर्थ (दो दिन), लखनऊ (दो दिन)।

के० एल० जौड़ा

सूचना

सब भाइयों को सूचित किया जाता है कि "सिद्ध सन्त पुरुष फकीर बाबा" के नाम की किताब जो हज़ूर मानव दयाल जी महाराज ने लिखी है शीघ्र ही छप रही है, बैसाखी के सत्संग पर यह किताब सत्संगी भाइयों को मिल सकेगी। जो सज्जन इसको खरीदना चाहें वे इतला दे दें।

के० एल० जौड़ा

मानवता मन्दिर होशियारपुर का 20वां वार्षिक सत्संग

यह वार्षिक सत्संग परम सन्त परम दयाल हज़ूर [फ़]क़ीर चन्द जी महाराज के पंच भौतिक शरीर छोड़ने [के] वाद पहली वार 13, और 14 अप्रैल 1982 को मनाया [ज]ायेगा। इसमें हिस्सा लेने के लिए वड़े-बड़े महापुरुषो को [नि]मंत्रण दिया गया है। प्रेमी सज्जनो से प्रार्थना है कि [व]ो इसमें शामिल होकर लाभ उठायें।

K. L. Jaura

सत्संग का टाईम—सुवहा 8 से 10 शाम को : 4 से 6

वन्दनम्

चरण शरण की वन्दना, नित कोइ और न काम।
गुरु वसो चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम॥
तेरी शरणागत हुआ फिर, किसकी राखूं आस।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूं उदास॥
रूप ध्याऊं, नाम गाऊं, शब्द राता मन।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन॥
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय॥
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग॥

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग 14-3-82 को होगा।

Regd. No. 2626574 MARCH 10th 1982
MANAV MANDIR NWHSP—7

ADDRESS

To

1283 Sh. A. Hanmanth Rao
H. No. 10-3-194/8
Humayun Nagar
Hyderabad 500028 A.P.

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR

Phone : 2022